शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'कितने घाव होने हैं' उपन्यास में नारी संघर्ष

शिवाली शर्मा (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
जम्मू विश्वविद्यालय
जम्मू, भारत

शोध संक्षेप

किसी भी समाज की उन्नति का पैमाना उस समाज में स्त्री की स्थिति को देखकर मापा जाता है। प्राचीनकाल में भारतीय समाज में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त थे, वहीं मध्यकाल में स्त्रियों को अनेक बन्धनों में बाँध दिया गया। आधुनिक काल में समाज सुधारकों का ध्यान इस ओर गया। उन्होंने स्त्रियों को बंधनों से मुक्त करने के लिए अनेक समाज सुधार आन्दोलन चलाये। फलस्वरूप स्त्रियों में आत्मविश्वास जाग्रत हुआ। इसके बावजूद पुरुष प्रधान समाज में आज भी महिलाओं की स्थिति बेहतर नहीं है। महिलाओं पर किये जाने वाले अत्याचारों में बलात्कार सबसे घिनौना कृत्य है। इससे पीड़ित महिला का पूरा जीवन नष्ट हो जाता है। साहित्यकार नारायणदास मानव के उपन्यास 'कितने घाव होने हैं' में स्त्री की इसी पीड़ा को उजागर किया गया है।

भूमिका

पितृसत्ता के इस युग में प्रारम्भ से ही पुरुष ने नारी को दोयम दर्जे पर रखा है। पुरुष का यही प्रयास रहता है कि वह स्त्री को आत्मनिर्भर न बनने दे। इसमें सफलता पाने के लिए वह घर के बाहर की दुनिया को अत्यंत भयावह, असुरक्षित, व चरित्र पर दाग पैदा करने वाली बताकर औरत के अन्दर भय पैदा करता है ताकि वह कभी भी घर की चारदीवारी को लांघ न सके। वह नारी को अपनी दासी, भोग्य और कुल को बढ़ाने वाली यांत्रिक मशीन मानता है। इसे केंद्र में रखकर साहित्यकार नारायण दास मानव ने 'कितने घाव होने हैं' उपन्यास लिखा है। उनका जन्म इलाहबाद, उत्तरप्रदेश में सन 1940 में हुआ। उन्होंने 'एक बार सावन हो जाओ' काव्य संग्रह, कागज़ का सांप कहानी संग्रह और दूसरा पलायन उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। स्त्री की आवाज को दबाने के लिए, उसे हराने के लिए पुरुष बहुत ही सरल तरीके का चुनाव करता है। वह उस पर चरित्रहीन होने का लाँछन लगाता है। जिनमें अन्य पुरुषों का भी उसे सहयोग प्राप्त होता है। औरतों के विरुद्ध इस प्रकार के मानसिक व शारीरिक शोषण की जड़ें समाज में बहुत ही गहरा स्थान बना चुकी हैं। कमलेश कुमार गुप्त लिखते हैं, "खाड़ी देशों में खुलेआम दुनिया भर की औरतों के हरम सजाये जा रहे हैं। पर्दा प्रथा तथा अनेक प्रकार की वर्जनाओं से उनकी दीन स्थिति का एहसास हो जाता है।"[1]

'दुलारी' का संघर्ष

नारी की स्थिति आज इस समय मे चिंताजनक बनी हुई है। अब इसको समझना, जानना अत्यन्त आवश्यक हो चुका है। अनगिनत बालिग, नाबालिग लड़कियाँ सामाजिक और राजनीति के कारण चक्रव्यूह में फँसायी जाती हैं और शोषण का लगातार शिकार बनती हैं। देश में महिलाओं के लिए अनेक कानून बने हैं। 8 मार्च

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। उस दिन महिलाओं की उपलब्धियों को बताया जाता है, परन्तु महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों में कमी दिखाई नहीं देती। मन्नू भंडारी 'एक कहानी यह भी' में लिखती हैं, "सामन्ती व्यवस्था में नारी एक वस्तु है, संपत्ति है, सम्भोग और सन्तान की इच्छा पूरी करने वाली मादा है।"[2]

यद्यपि यह तथ्य उल्लेखनीय है कि राजा राममोहन रॉय के सद्प्रयासों से सती प्रथा पर रोक लगी। अनके महापुरुषों ने स्त्रियों के उत्थान के लिए अनेक प्रयास किये। इसके बावजूद आज महिलाओं के प्रति अपराध बढ़ते जा रहे हैं। उसका शोषण लगातार जारी है।

नारायण दास 'मानव' द्वारा लिखित उपन्यास 'कितने घाव होने हैं' के माध्यम से लेखक ने समसामयिक परिस्थितियों के तहत स्त्रियों के साथ शारीरिक और मानसिक शोषण का बड़ा ही हृदयस्पर्शी और मार्मिक वर्णन किया है। इसमें नायिका दुलारी शारीरिक शोषण का शिकार है। वह मानसिक पीड़ा को हर क्षण भोगती है। एक दुलारी ही नहीं, न जाने, कितनी बेटियाँ इस शोषण और उत्पीड़न से ग्रस्त हैं। आए दिन हम खबरों में सुनते हैं कहीं तीन साल की बच्ची के साथ बलात्कार, कहीं तेरह साल की, तो कहीं तीस साल की महिला इसका शिकार बन रही है। तो कहीं एक बच्ची के साथ पाँच लोगों ने हैवानियत की।

इस शोषण से ग्रस्त लड़कियाँ, शरीर से ही चोटिल नहीं होतीं, अपितु यह घिनौना कृत्य उन्हें हृदय से लेकर अंतर्मन को भी हिला देता है। एक हँसती खिलखिलाती बच्ची को यह जड़ बना देता है। उपन्यास की नायिका दुलारी अपनी कहानी कमल को सुनाते हुए कहती है "बाबू जी चोट लगती है, तो दो ही चीजें बहती हैं, आँसू और खून।"[3]

इसमें यह बताने का प्रयास किया है कि जो लड़की पुरुष की हवस का शिकार बनती है, उसका जीवन दूभर हो जाता है। वह लड़की न जाने कितने गहरे घाव लिए, कितनी मानसिक पीड़ा लिए अपना जीवनयापन करती है। वह इस तरह से अपने आप को बाँध लेती है कि किसी को भी अपनी जिन्दगी में आने नहीं देती। वह अपनी तुलना कीचड़ से करना शुरू कर देती है। ऐसी लड़कियाँ अकेलेपन को ही अपना सर्वस्व मान लेती हैं। वह टूट चुकी होती है। इस बात का परिचय हमें तब मिलता है जब नायिका शहर से आए युवक कमल से कहती है कि जब एक शोषित लड़की को कोई सम्मान की दृष्टि से देखता है तो उसे वो अपने ऊपर किया उपकार ही महसूस होता है।

"तो, तो बाबूजी यहाँ से जाने के बाद हमको भूल जाना, ऐसे जैसे कभी मिले ही न हों।"[4]

इससे एक और बात स्पष्ट होती है कि पुरुष नारी के स्वाभिमान, उसकी गरिमा को खंडित करता है। उसकी आबरू को लूटता है। यह सारे अत्याचार उसके द्वारा होते हैं। पर यह समाज स्त्री को ही घृणित दृष्टि से देखता है, जैसे वही दोषी हो। इसमें यह भी बताया गया है कि जब एक बेटी के साथ घृणित कृत्य होता है तो उसके साथ-साथ उसका परिवार भी उसके दुख, उसके अवसाद में हर क्षण मरता है। और न जाने यह उत्पीड़न हमारे देश की कितनी बेटियाँ झेल रही होंगी। नारी समाज में संदेह का शिकार बनती है, इस बात का पता हमें तब चलता है जब दुलारी की माँ लक्ष्मी अपने दोस्त जगेसर के साथ बिना विवाह किए एक दोस्त की तरह साथ रहते हैं, तो यही समाज उसे कुल्टा, बदचलन कहता है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लक्ष्मी कहती है, "आप भी देख लेना काका पीठ पीछे यह लोग आपको भी नहीं बक्छेंगे।"[5]

वर्तमान समय में अगर कोई पर पुरुष स्त्री की सहायता करने का प्रयास भी करे, तो यह समाज उसे भी कठघरे में लाकर खड़ा कर देता है। हम यह नहीं समझ पा रहे कि यह कैसा समाज है ? कहा जाता है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है और समाज मनुष्यों से बनता है, पर अकेली नारी के लिए यही समाज अभिशाप बन जाता है। इसमें नायिका दुलारी की माँ लक्ष्मी जब अपने भाई जगमोहन और मित्र जगेसर के साथ मिलकर रह रहे होते हैं तब तक तो सब ठीक था, परन्तु जब उसके भाई की मृत्यु हो जाती है और वह जगेसर के साथ रहने लगती है तो यही समाज उसे बदचलन कह देता है। तब इसी सामाजिक भय के कारण वह उससे विवाह कर लेती है।

इसमें एक और पहलू स्पष्ट हुआ है कि अगर नारी अन्याय का विरोध करती है, अन्याय के खिलाफ आवाज बुलन्द भी करती है तो यह क्रूर समाज उसकी गरिमा को भंग कर देता है। उस नारी की आवाज के साथ-साथ उसकी इज्जत के भी चिथड़े-चिथड़े कर देता है। इसमें दुलारी जब अपनी ही गाँव की बेटी फूलकलिया को ठाकुर दिनेश से बचाने का प्रयास करती है, तब दिनेश, दुलारी को भद्दी-भद्दी गालियों के साथ-साथ धमकी भी देते हुए कहता है, "देख लेना दुलारिया तेरी वह गति हम बनायेंगे कि रोये नहीं चुकेगा।"[6]

आज के युग में नारी सशक्तिकरण की बात होती है, परन्तु असलियत में नारी की यह स्थिति बन गई है कि पुरुष अपने अहम को बचाने के लिए औरत को अपने पाँव तले कुचलने के लिए तैयार बैठा है। पुरुष का एक और रूप इसमें स्पष्ट हुआ है। वह है प्रतिशोध लेने की भावना का। अगर कोई स्त्री, पुरुष को उसके निंदनीय कृत्य पर दण्डित करती है तो इससे पुरुष के अहंकार पर चोट लगती है। वह पुरुष भूखे भेड़िए का रूप ले लेता है और औरत को नोचने के लिए तैयार हो जाता है।

दुलारी से बदला लेने के लिए दिनेश अपने तीन दोस्तों के साथ मिलकर दुलारी के साथ बलात्कार करता है। यह चार दरिंदे मिलकर उसे नोच खाते हैं। और साथ में वह उसके होने वाले पति की भी बड़ी बेरहमी के साथ हत्या कर देते हैं। इतना ही नहीं उसे धमकाया भी जाता है कि अगर उसने अपना मुँह खोला, तो उसका परिवार भी मारा जाएगा। अगर कोई नारी साहस बटोरकर, यह सब होने के बाद अदालत में जाती भी है, तो पुरुषसत्ता के प्रतिनिधि वकील अपने तीखे प्रश्नों से बार-बार उसे शारीरिक शोषण की पीड़ा का एहसास दिलाते हैं। वह बार-बार उस मार्मिक पीड़ा के साथ-साथ अपमान को भी झेलती है।

पूरे मामले को ऐसा रूप दे दिया जाता है मानो उसके साथ गुनाह हुआ नहीं वह ही गुनाहगार है। शोषित हुई नारी स्वयं को अधूरा ही मानती है। वह यह मान लेती है कि उसकी यही नियति है। वह सिर्फ साँस ले रही होती है। उसका जीने का मोह छूट जाता है।

दुलारी की कहानी सुनकर जब कमल उसे रोककर चुप होने के लिए कहता है तो वह कहती है "नहीं बाबूजी यह गलत होगा, अब आपको हमारी पूरी कहानी सुननी होगी, हम जानती हैं बाबू जी अधूरापन कितना तड़पाता है।"[7]

यह पुरुषसत्तात्मक समाज इतना निर्दयी है कि वह औरत का शोषण करने के साथ-साथ उसकी मन:स्थिति को भी खंडित कर देता है। उसके व्यवहार को बदल कर रख देता है। वह अपने आप को असहाय, अँधेरे में कैद और समाज से कटा हुआ पाती है। वह हर क्षण स्वयं को

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तिरस्कृत महसूस करती है। जब उस लड़की के लिए उसका परिवार उसके विवाह के लिए सोचता है, तब लड़की के साथ-साथ उसके माता-पिता को भी यह एहसास दिलाया जाता है कि वे एक शोषित लड़की के पिता हैं। एक पिता अपनी बेटी के लिए न जाने कितनी चौखटों पर जाता है उसके लिए रिश्ता ढूँढने, पर वहाँ भी उसे बेइज्जत किया जाता है। अगर काई उस लड़की से विवाह के लिए तैयार भी होता है तो महज इसमें अपना स्वार्थ सिद्ध करता है। पूरे योजनाबद्ध तरीके से उसे फँसाया जाता है। उसके पिता की जमा-पूँजी को हथियाने का प्रयास होता है। शोषण की शिकार लड़की का विवाह केवल रूपयों के बल पर होता है।

परन्तु वह लड़की ससुराल में भी तिरस्कृत जीवन व्यतीत करती है। लड़की का पति शादी के समय कहता है कि वह उसे समाज में प्रतिष्ठा, मान-सम्मान दिलाएगा, किन्तु असलियत में प्रतिष्ठा तो दूर की बात है उसका उसके प्रति व्यवहार अति घृणास्पद हाता है। उपन्यास में दुलारी का पति उसे चीरी-फाड़ी लड़की का नाम देता है। दुलारी का पति अपने चाचा से बात करते हुए कहता है, "चच्चू इस बदजात चीरी-फाड़ी लड़की से यूँ ही शादी नहीं की है।"8

कोमल हृदय की स्वामिनी नारी जो इस समाज में शोषण का शिकार बनती है, उसके सम्मान को रोंदा जाता है। उसके शरीर और हृदय के साथ आत्मा को भी घाव दिए जाते हैं। नारी अपने ऊपर हुए अत्याचार को अपने अन्दर दबाए रखती है। दुलारी शहर से आए युवक कमल को अपनी आपबीती सुनाती है तो वह भी दुखी हो जाता है। उसका हृदय वेदना से ग्रस्त हो जाता है। वह भी उसकी पीड़ा को अपने अन्दर ही अन्दर भोगता है। तब दुलारी उनसे कहती है कि बाबूजी मैं भी अपनी ताई के साथ नासिक कुम्भ में जाना चाहती थी, परन्तु उसकी ताई उसे नहीं लेकर गई, क्योंकि उन्हें पता था कि आप आने वाले हैं। बलात्कार से पीड़ित स्त्री जब अपनी कहानी किसी से कहती है तब भी वह अपने अन्दर घाव खाने के लिए तैयार बैठी है। दुलारी कमल से कहती है, "बाबूजी ऐसा क्यों हो रहा है बार-बार आखिर कितने घाव होने हैं।"9

निष्कर्ष

आलोच्य उपन्यास में स्त्री की पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया गया है। एक अकेली दुलारी ही नहीं है, बल्कि देश में ऐसी अनेक दुलाखियाँ हैं, जिनके साथ बदसलूकी हुई है और वे सभी अभिशप्त जीवन जीने पर मजबूर हैं। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री को ही जिम्मेदार ठहराया जाता है। नारायणदास मानव ने वर्तमान परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 गुप्त कमलेश कुमार, महिला सशक्तिकरण, पृष्ठ 67
2 मन्नू भंडारी, एक कहानी यह भी, पृष्ठ 130
3 नारायण दास 'मानव', कितने घाव होने हैं, पृष्ठ 17
4 वही, पृष्ठ 22
5 वही, पृष्ठ 33
6 वही, पृष्ठ 45
7 वही, पृष्ठ 56
8 वही, पृष्ठ 85
9 वही, पृष्ठ 92